

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीगारुडे महापुराणे पूर्रखण्डे प्रथमांशाख्ये आचारकाण्डे

॥ श्रीरिषुपञ्जरस्तोत्रम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীরিষুপঞ্জরস্তোত্রম্ ॥

হরিরুচ

প্ররক্ষ্যাম্যধুনা হ্যেতদ্বৈষ্ণৱং পঞ্জরং শুভম্।
নমো নমস্তে গোরিন্দ চক্রং গৃহ্য সুদর্শনম্।
প্রাচ্যাং রক্ষস্ব মাং রিষেণ ৳রামহং শরণং গতঃ ॥ 1 ॥

গদাং কৌমোদকীং গৃহ্ন পদ্মনাভ নমোহস্ত তে।
যাম্যাং রক্ষস্ব মাং রিষেণ ৳রামহং শরণং গতঃ ॥ 2 ॥

হলমাদায সৌনন্দং নমস্তে পুরুষোত্তম।
প্রতীচ্যাং রক্ষ মাং রিষেণ ৳রামহং শরণং গতঃ ॥ 3 ॥

মুসলং শাতনং গৃহ্য পুণ্ডরীকাক্ষ রক্ষ মাম্।
উত্তরস্যাং জগন্নাথ ভরন্তং শরণং গতঃ ॥ 4 ॥

খড্গমাদায চর্মাথ অস্ত্রশস্ত্রাদিকং হরে।
নমস্তে রক্ষ রক্ষোহ্ন ঐশান্যাং শরণং গতঃ ॥ 5 ॥

পাঞ্চজন্যং মহাশঙ্খমনুদ্বোধঞ্চ পঙ্কজম্।
প্রগৃহ্য রক্ষ মাং রিষেণ আগ্নেয়্যাং রক্ষ সুকর ॥ 6 ॥

চন্দ্রসূর্যং সমাগৃহ্য খড্গং চান্দ্রমসং তথা।
নৈরৃত্যাং মাং চ রক্ষস্ব দির্যমূর্তে নৃকেসরিন্ ॥ 7 ॥

রৈজযন্তীং সম্প্রগৃহ্য শ্রীরংসং কণ্ঠভূষণম্।
রাযর্যাং রক্ষ মাং দেৱ হযগ্রীর নমোহস্ত তে ॥ 8 ॥

रैनतेयं समारुह्य वरुणरिक्खे जनार्दन।
माङ्ग रक्खजित सदा नमस्तेहस्तुपरजित ॥ 9 ॥

रिशालाक्खं समारुह्य रक्ख मां वरुण रसातले।
अकूपार नमस्तुभ्यं महामीन नमोहस्तु ते ॥ 10 ॥

करशीर्षाद्यङ्गुलीषु सत्य वरुण बालुपञ्जरम्।
कुंठरा रक्खस्व मां रिक्खेण नमस्ते पुरुषोत्तम ॥ 11 ॥

एरमुक्खं शङ्कराय रैक्खं पञ्जरं महं।
पुरा रक्खार्थमीशान्याः कात्यायन्या वृषध्वज ॥ 12 ॥

नाशयामास सा येन चामरं महिषासुरम्।
दानरं रक्तरीजङ्ग अन्यांश्च सुरकण्ठकान्।
एतज्जपन्नरो भक्त्या शत्रून्निजयते सदा ॥ 13 ॥

॥ इति श्रीरिषुपञ्जरस्तोत्रं समाप्तम् ॥